B.A. Part-I, Paper-1st
History

डॉ० मिथिलेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, इतिहास
जे० एम० एस० कॉलेज, मुंगेर।

① प्रश्न गुप्तकाल को स्वर्णयुग कहा जाता है। व्याख्या करें।

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी जाती है। इतिहास में स्वर्णयुग उस काल को कहा जाता है जिसमें राज्य और प्रजा का चतुर्दिक विकास होता है। निःसंदेह गुप्तकाल में भारत की बहुमुखी प्रगति हुई और अन्य राष्ट्रों के सम्मुख हमारे देश का मस्तक ऊँचा हुआ। इस काल में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास हुआ और प्रजा की आध्यात्मिक मानसिक तथा नैतिक प्रगति हुई।

भारतीय इतिहास में गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहे जाने के निम्नांकित प्रमुख कारण हैं—

① महान सम्राटों का युग—

राजनैतिक दृष्टिकोण से गुप्तकाल महान व्यक्तियों का युग था। समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, स्कन्दगुप्त आदि वीर और साहसी सम्राट इसी युग में पैदा हुए थे, इन महान व्यक्तियों ने साम्राज्य का निर्माण भी किया और उसका संगठन भी। उन्होंने समस्त भारत पर विजय करके उस पर आधिपत्य कायम किया और विदेशियों को भी भारत से खदेड़ा। गुप्त राजाओं ने हमेशा प्रजा का ध्यान रखा।

② शांति तथा सुव्यवस्था का युग:—

गुप्तकाल भारतीय इतिहास में शान्ति तथा सुव्यवस्था का युग माना जाता है। समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने एक ऐसे विशाल, सुदृढ़ और सुव्यवस्थित शासन की स्थापना की थी कि वह कई शताब्दियों तक चलता रहा। इस समय न्याय की उचित व्यवस्था थी। यातायात के साधनों को पर्याप्त व्यवस्था करके गुप्त सम्राटों ने व्यापार को प्रोत्साहन दिया। प्रजा के नैतिक और आध्यात्मिक विकास के

Scanned with CamScanner

(2)

लिए भी प्रयास किया गया। स्थानीय संस्थाओं को पर्याप्त स्वतंत्रता प्राप्त थी।

(3) साहित्य के उत्कर्ष का युग :→

इस काल में साहित्य का अद्भुत विकास हुआ। कई गुप्त सम्राट स्वयं विद्वान एवं लेखक थे। अन्य विद्वानों एवं कलाकारों का भी सम्मान किया जाता था। समुद्रगुप्त काव्य एवं संगीत का बड़ा प्रेमी था। उसका दरबारी कवि हरिषेण उच्च कोटि का विद्वान था। उसका प्रयाग प्रशस्ति-लेख संस्कृत भाषा में था। वसुबन्धु और दिग्नाग इस काल के सुविख्यात बौद्ध विद्वान थे वे संस्कृत में ही लिखा करते थे।

संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में अभिज्ञानशाकुन्तलम् को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। इसमें दुष्यंत और शकुन्तला की प्रेम-कहानी है। दुष्यंत एक राजा का लड़का था और शकुन्तला एक अप्सरा लड़की थी। सम्पूर्ण विश्व की प्रायः सम्पूर्ण भाषाओं में इस नाटक का अनुवाद हो चुका है। मेघदूत भी विरह का एक उत्कृष्ट नमूना है। कालिदास की अन्य रचनाएँ भी अपने क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

इसी समय शूद्रक ने मृच्छकटिकम् और विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस तथा देवीचन्द्रगुप्तम् नामक नाटकों की रचना की। भट्टि ने रावण वध नामक महाकाव्य प्रस्तुत की। गद्य के क्षेत्र में वसुबन्धु ने वासवदत्तम् लिखा। पंचतन्त्र भी रोचक एवं उपयोगी कथाओं का वर्णन कर शिक्षा देने का प्रयत्न किया है। आर्थर राइडर एक पाश्चात्य विद्वान था इसने पंचतंत्र को विश्व का सर्वोत्तम कथा-संग्रह माना है।

Scanned with CamScanner

④ वैज्ञानिक उन्नति का युग :→

गुप्तकाल में गणित, ज्योतिष, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा धातु विज्ञान की इस युग में बड़ी प्रगति रही। इस बात के प्रमाण उपलब्ध है कि रेखागणित का अभ्यास इस युग में होता था। दशमलव प्रणाली का अन्वेषण भी इसी काल में हुआ था। आर्यभट्ट नामक विद्वान ने "आर्यभट्टीयम" नाम का ग्रंथ लिखा। जिसमें अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित तीनों की विवेचना की गई है। ज्योतिष की भी इस काल में बड़ी उन्नति हुई। आर्यभट्ट इस काल के बहुत बड़े ज्योतिषी थे। इसने इस बात को सिद्ध किया कि चन्द्रमा के सूर्य तथा पृथ्वी के बीच में आ जाने से ग्रहण लगता है। आर्यभट्ट ने इस तथ्य को भी सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। वराहमिहिर इस युग के दूसरे प्रतिष्ठित तथा विख्यात ज्योतिषी थे। चरक तथा सुश्रुत इस काल के प्रसिद्ध वैद्य थे।

⑤ कला तथा स्थापत्य कला का उन्नति का युग :→

गुप्तकाल में वास्तुकला, शिल्पकला, मूर्ति-निर्माण कला, संगीत कला आदि सभी का पर्याप्त विकास हुआ। अजन्ता की गुफाओं की चित्रकारी, बौद्ध तथा हिन्दू मूर्तियाँ, मंदिर, विहार, चैत्य तथा स्तूप इस काल की श्रेष्ठता के प्रबल प्रमाण है। इस युग के पत्थर तथा मिट्टी के अनेक मन्दिर अथवा उनके भग्नावशेष अब भी विद्यमान है। इनमें जबलपुर जिले का विष्णु मन्दिर, नागोद का शिव-मंदिर, देवगढ़ का दशावतार तथा कानपुर के भीतरगाँव का मंदिर बहुत प्रसिद्ध है। भीतरगाँव का मन्दिर ईंट का है, इसकी दीवारों पर हिन्दू देवताओं के पौराणिक दृश्य बने हैं। भारतीय स्थापत्य के इतिहास में इस मंदिर का महत्वपूर्ण

स्थान है। अजन्ता, एलोरा तथा बाघ के गुहा-विहार इसी युग के हैं जो विश्व-प्रसिद्ध हैं।

(6) धार्मिक सहिष्णुता का युग :→

गुप्तकाल धार्मिक-सहिष्णुता, सार्वभौमिकता का युग था। देश में विभिन्न धर्मावलम्बी रहते थे। धर्म के नाम पर कभी ~~हिंसा~~ हिंसा नहीं हुई। इस समय के राजा हिन्दू धर्म को मानते थे। ऐसी स्थिति में गुप्त सम्राट चाहते तो बौद्ध तथा जैन धर्म का उन्मूलन कर सकते थे, लेकिन ऐसा नहीं किया। गुप्तकाल में हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म तीनों साथ-साथ फल-फूल रहा था। भारत के अनेक स्थानों पर बौद्ध धर्म लोकप्रिय था। राजा, सेठ-साहूकार, शिल्पियों के संघ बौद्ध-विहारों को दान देते थे और भिक्षुओं की सहायता करते थे।

(7) विदेशों में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रसार का युग :→

वाह्य संसार ~~के~~ के साथ भारत का सम्पर्क जितना इस युग में हुआ उतना कभी नहीं हुआ था। गुजरात और सौराष्ट्र के गुप्त साम्राज्य में विलय हो जाने पर यूरोपीय देशों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम हुआ। चीन, मध्य एशिया, जावा, सुमात्रा, हिन्दचीन आदि देशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ। आज भी इन देशों में करोड़ों बौद्ध अनुयायी बने हुए हैं जिनके रीति-रिवाजों, उत्सवों और त्यौहारों में भारतीयता की पुट मिली हुई दृष्टिगोचर होती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि साहित्य, कला, विज्ञान, धर्म, समाज, संस्कृति, व्यापार, कृषि, शासन-व्यवस्था और विदेशों के साथ सम्पर्क आदि सभी क्षेत्रों में महान प्रगति हुई। गुप्त सम्राटों के उदार दृष्टिकोण, कला-प्रेम और संस्कृति संरक्षण इत्यादि कार्यों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है।

Scanned with CamScanner